

### तैयार टीम इंडिया

## कैसे मिटे गरीबी

कांग्रेस अध्यक्ष राहुल गांधी ने कहा है कि उनकी पार्टी की सरकार बनी तो देश के सभी गरीबों को न्यूनतम आमदनी की गारंटी दी जाएगी। कांग्रेस के लोगों का कहना है कि हर गरीब व्यक्ति को हर महीने 1500 से 1800 रुपये सीधे बैंक खाते में दिए जा सकते हैं।

इस तरह पार्टी ने अपना चुनावी अजेंडा साफ कर दिया है। गरीबों और किसानों के सवाल वह लोकसभा चुनाव में उठाएगी। ऐसे सवाल कांग्रेस पहले भी उठा चुकी है। राजनीति में इंदिरा गांधी की धमक ही गरीबी हटाओ के नारे से बनी थी। लेकिन गरीबों को सीधे पैसे बांटने की बात चुनाव में पहली बार उठी है। पिछले कुछ चुनावों में, खासकर विधानसभा चुनावों में एक रुपये किलो चावल से लेकर मंगलसूत्र, मिक्सी, रेडियो, कंप्यूटर, लैपटॉप जैसी चीजें देने के वादे विविध पार्टियां करती रही हैं। कहीं-कहीं इन पर अमल भी हुआ है, लेकिन इस मिजाज के लोकलुभावन वादे लोकसभा चुनाव में शायद इस बार ही देखने को मिलें। कांग्रेस के वादे की काट में बीजेपी भी अपना पिटारा खोल सकती है। कहा जा रहा है, सरकार बजट में गरीबों के लिए यूनिवर्सल बेसिक इनकम का ऐलान कर सकती है। किसानों को शून्य ब्याज दर पर कर्ज या प्रति एकड़ प्रति फसल के हिसाब से तयशुदा रकम दी जा सकती है।

भुखमरी की समस्या भारत में एक बड़ी आबादी के सामने आज भी बनी हुई है। लिहाजा गरीब समर्थक योजनाओं की जरूरत तो रहेगी। उनके हाथ सीधे कुछ पैसे आते हैं तो इससे उन्हें कुछ राहत जरूर मिलेगी। लेकिन इससे उनका जीवन नहीं बदलने वाला और गरीबी हरगिज नहीं मिटने वाली। अरबपतियों की सबसे तेज बढ़ती संख्या वाले देश भारत में भुखमरी की समस्या का मौजूद होना यहां की नीतिगत प्राथमिकताओं पर एक बड़ा प्रश्नचिह्न लगाता है। अब तक की सभी सरकारें गरीबों को किसी तरह जिंदा रखने की नीति पर ही काम करती रही हैं। उनकी हालत में आमूल बदलाव करना और उन्हें विकास प्री या का हिस्सा बनाना सरकारी चिंता से बाहर रहा है।

नब्बे के दशक से शुरू हुई नई अर्थनीति ने अर्थव्यवस्था को गति दी है और देश में खुशहाली का स्तर ऊंचा किया है, लेकिन इसके साथ जुड़ा आर्थिक असमानता का रोग दिनोदिन बढ़ता जा रहा है। इस अर्थनीति के तहत अमीरी और गरीबी का फासला इतना बढ़ गया है, जिसकी कुछ समय पहले कल्पना भी नहीं की जा सकती थी। ऑक्सफैम की रिपोर्ट बताती है कि वर्ष 2017 में भारत में जितनी संपत्ति पैदा हुई, उसका 73 प्रतिशत हिस्सा देश के 1 फीसदी धनाढ्य लोगों के हाथों में चला गया, जबकि नीचे के 67 करोड़ भारतीयों को इस संपत्ति के सिर्फ एक फीसदी हिस्से पर संतोष करना पड़ा है। इस आर्थिक मॉडल को नकारने की उम्मीद राजनेताओं की मौजूदा पीढ़ी से नहीं की जा सकती, लेकिन अगर वे टीबी का इलाज माथे पर बाम लगाकर ही करने पर अड़े हैं तो उन्हें टोका जरूर जाना चाहिए।

## एसबीआई बैंक की बड़ी चूक, लीक हुई लाखों बैंक खातों की जानकारी

नई दिल्ली। क्या आपका बैंक खाता स्टेट बैंक ऑफ इंडिया में है? अगर हां, तो ये खबर आपको चिंता में डाल सकती है। बुधवार को सामने आई एक रिपोर्ट के अनुसार, स्टेट बैंक ऑफ इंडिया अपने की-सर्वर को सुरक्षित करना भूल गया, जिसके कारण कई खातों की जानकारी सार्वजनिक होने का खतरा है। बताया जा रहा है कि इस सर्वर में बैंक खातों की जानकारी, खाते में मौजूद बैलेंस से जुड़ी काफी संवेदनशील जानकारी मौजूद थी।



रिसर्चर ने इसकी सूचना दी थी। जिसके बाद उन्होंने इसके बारे में जानने की कोशिश की। रिसर्चर के द्वारा बताया गया था कि बैंक की ओर से सर्वर पर किसी पासवर्ड को नहीं रखा गया है, ऐसे में कोई भी व्यक्ति डाटा को एक्सेस कर सकता है। हालांकि, अभी ये साफ नहीं है कि ये सर्वर कब तक बिना किसी पासवर्ड के साथ ओपन

रहा। Techcrunch ने जब इस मामले में स्टेट बैंक ऑफ इंडिया से सवाल पूछा तो बैंक ने किसी भी तरह की टिप्पणी करने से मना कर दिया।

रिपोर्ट के अनुसार, बिना पासवर्ड का ये हिस्सा SBI Quick था जिसके जरिए बैंक की ओर से किसी भी खाता धारक को फोन कॉल या मैसेज किया जा सकता है। बैंक की वेबसाइट पर भी इस बात की जानकारी दी हुई है, "इस सिस्टम के जरिए आप अपने खाते से जुड़ी सभी जानकारियां अपने फोन पर पा सकते हैं।"

रिपोर्ट में खुलासा किया गया है कि जिस दौरान ये सर्वर

बिना किसी पासवर्ड के ओपन था तो उन्होंने देखा कि वहां से सभी खाताधारकों को मैसेज भेजे जा रहे हैं। सोमवार को ही बैंक की ओर से करीब 30 लाख मैसेज भेजे गए। सर्वर के जरिए आप पिछले एक महीने के सभी मैसेज भी देख सकते थे। गौरतलब है कि स्टेट बैंक ऑफ इंडिया देश का सबसे बड़ा बैंक है, जिसमें करोड़ों लोगों के बैंक खाते हैं।

ऐसे में इस प्रकार की रिपोर्ट खातों की सुरक्षा पर सवाल खड़े करती है। आपको बता दें कि इससे पहले भी कई बार आधार कार्ड की सुरक्षा को लेकर सवाल खड़े हो चुके हैं।

## 28 फरवरी के बाद काम नहीं करेगा E-Wallet

नई दिल्ली। अगर आप ई-वॉलेट में पैसे लोड कर उसका इस्तेमाल पेमेंट के लिए करते हैं और आपने अभी तक केवाईसी नहीं करवाया है तो 28 फरवरी के बाद आपका वॉलेट बंद हो सकता है। भारतीय रिजर्व बैंक के नियमों के अनुसार, वॉलेट के पैसे खर्च करने के लिए भी केवाईसी (नो योर कस्टमर) करवाना जरूरी है। केवाईसी करवाने की आखिरी तारीख 28 फरवरी है।



एक आम उपभोक्ता के पास 3-4 ई-वालेट्स होते हैं। ऐसे में सभी का फिजिकल केवाईसी करवाना वॉलेट कंपनी और ग्राहक, दोनों के लिए मुश्किल भरा काम है। हालांकि कई बड़ी वॉलेट कंपनियां डोर स्टेप

केवाईसी का विकल्प दे रही हैं। छोटी वॉलेट कंपनियों के लिए यह तरीका खर्चीला साबित हो रहा है। इस मुद्दे पर पेमेंट कार्डसिल ऑफ इंडिया के चेयरमैन एमिरेट्स नवीन सूर्या का कहना है अगर ग्राहक केवाईसी नहीं करवा पाए तो वॉलेट से पैसे एकाउंट में ट्रांसफर करने के एक मौका मिलेगा। नवीन सूर्या ने बताया कि इस समय भारत में ई-वॉलेट इंडस्ट्री 18 से 20 हजार करोड़ रुपये की है।

## सोना की चमक बढ़ी, हुआ 34 हजारी

नई दिल्ली (आरएनएस)। वैवाहिक मांग सामान्य रहने के बावजूद वैश्विक स्तर पर दोनों कीमती धातुओं की बढ़ी चमक के कारण दिल्ली सर्राफा बाजार में बुधवार को सोना 320 रुपये की तेज छलांग लगाकर 34,000 के आंकड़े के पार 34,070 रुपये प्रति दस ग्राम पर पहुंच गया। औद्योगिक मांग आने और सिक्का निर्माताओं की ओर से उठाव बढ़ने से चांदी भी 330 रुपये की मजबूती के साथ साढ़े सात माह के उच्चतम स्तर 41,330 रुपये



प्रति किलोग्राम पर पहुंच गई। अंतरराष्ट्रीय बाजार में पीली धातु मई 2018 के बाद के उच्चतम स्तर पर बनी हुई है। लंदन का सोना हाजिर 3.20 डॉलर की तेजी के साथ

1,313.75 डॉलर प्रति औंस पर पहुंच गया। अप्रैल का अमेरिकी सोना वायदा भी 3.90 डॉलर की बढ़त में 1,319.10 डॉलर प्रति औंस बोला गया। अखिल भारतीय सर्राफा एसोसिएशन के उपाध्यक्ष एस.के. जैन ने बताया कि सोने के भाव पर वैश्विक तेजी का अधिक असर है। स्थानीय स्तर पर जेवराती मांग सामान्य है, लेकिन विदेशी बाजारों में रही तेजी के कारण यहां भी इसके भाव बढ़ गये हैं।

### तनडे में भारत की सबसे बड़ी हार



हैमिल्टन। न्यूजीलैंड ने 212 गेंदें शेष रहते जीत दर्ज की, जो गेंदें शेष रहने के लिहाज से भारत की सबसे बड़ी हार है। इससे पहले अगस्त 2010 में

दांबुला में भारत को श्रीलंका ने 209 गेंदें शेष रहते हराया था। तेज गेंदबाजों ट्रेट बोल्ट और कॉलिन डि ग्रैंडहोम की तुफानी गेंदबाजी से टीम इंडिया परत हो गई। न्यूजीलैंड ने चौथे वनडे मैच में गुरुवार को हैमिल्टन में भारत को आठ विकेट से करारी शिकस्त देकर पांच मैचों की सीरीज में पहली जीत दर्ज की और घर में अपनी प्रतिष्ठा बचा ली। इस हार के बावजूद भारत ने सीरीज में 3-1 की बढ़त बना रखी है। सीरीज का पांचवां और अंतिम मैच तीन फरवरी को वेलिंगटन में खेला जाएगा। न्यूजीलैंड ने 212 गेंदें शेष रहते जीत दर्ज की, जो गेंदें शेष रहने के लिहाज से भारत की सबसे बड़ी हार है। इससे पहले अगस्त 2010 में दांबुला में भारत को श्रीलंका ने 209 गेंदें शेष रहते हराया था। गेंदें शेष रहने के लिहाज से न्यूजीलैंड ने अपनी पांचवीं सबसे बड़ी जीत की बराबरी की।

## गुजरात में बन रहा है दुनिया का सबसे बड़ा क्रिकेट स्टेडियम, 700 करोड़ की आगामी लागत

अहमदाबाद। गुजरात के नाम के साथ एक और विश्व रिकॉर्ड बनने जा रहा है। इस नए रिकॉर्ड का माध्यम बन रहा है अहमदाबाद स्थित सरदार पटेल मोटेरा क्रिकेट स्टेडियम। फिलहाल तो इस क्रिकेट स्टेडियम में पुनः निर्माण की प्रक्रिया जोरशोर से चल रही है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और बीजेपी के राष्ट्रीय अध्यक्ष अमित शाह का यह ड्रीम प्रोजेक्ट इस वर्ष के अंत तक के पूरा होने की उम्मीद है।



बीजेपी अध्यक्ष अमित शाह ने इस भव्य स्टेडियम के निर्माण कार्य की प्रगति के सिलसिले 15 जनवरी को दौरा किया था। 700 करोड़ की लागत से बन रहे इस स्टेडियम की

क्षमता ऑस्ट्रेलिया के मेलबोर्न से अधिक यानी 1,10,000 से अधिक दर्शक मैच का लुफ्त उठा सकेंगे। मोटेरा में बन रहे यह क्रिकेट स्टेडियम को 63 एकड़ जमीन पर आकार दिया जा रहा है। आइये देखते हैं और क्या खासियत है मोटेरा क्रिकेट स्टेडियम की- इस स्टेडियम को पुराने स्थान पर ही फिर से बनाया जा रहा है। वर्ष 2015 के अंत में इस स्टेडियम को तोड़ने का काम शुरू किया गया।

### माइकल वॉन ने टीम इंडिया का उड़ाया मजाक, भारतीय फैस ने दिखाया आईना

हैमिल्टन। न्यूजीलैंड ने चौथे एकदिवसीय अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट मैच में गुरुवार को यहां टीम इंडिया को आठ विकेट से करारी शिकस्त देकर पांच मैचों की सीरीज में पहली जीत दर्ज की। इस जीत में न्यूजीलैंड तेज गेंदबाजों ट्रेट बोल्ट और कॉलिन डि ग्रैंडहोम की तुफानी गेंदबाजी की खास भूमिका रही। न्यूजीलैंड ने टीम इंडिया को पहले केवल 92 में समेट दिया। जिसके बाद उसने 14.4 ओवर में ही निर्धारित लक्ष्य को हासिल कर लिया। टीम इंडिया के इस कम स्कोर पर इंग्लैंड के पूर्व कप्तान माइकल वॉन ने टिवटर पर चुटकी ली तो टीम इंडिया के फैस ने उन्हें ट्रोल् कर दिया।



वॉन ने ट्विटर पर लिखा कि मैंने टीम इंडिया को 92 में समेट दिया। न्यूजीलैंड ने टीम इंडिया को पहले केवल 92 में समेट दिया। जिसके बाद उसने 14.4 ओवर में ही निर्धारित लक्ष्य को हासिल कर लिया। टीम इंडिया के इस कम स्कोर पर इंग्लैंड के पूर्व कप्तान माइकल वॉन ने टिवटर पर चुटकी ली तो टीम इंडिया के फैस ने उन्हें ट्रोल् कर दिया।

### रूस के ग्रैंड मास्टर क्रैमनिक ने शतरंज से लिया संन्यास

नई दिल्ली। दुनिया के सर्वश्रेष्ठ शतरंज खिलाड़ियों में से एक रूस के ग्रैंड मास्टर व्लादिमिर क्रैमनिक ने मंगलवार को पेशावर शतरंज से संन्यास लेने की घोषणा कर दी। 43 वर्षीय क्रैमनिक 2000 की शतरंज विश्व चैंपियनशिप में गत चैंपियन गैरी कस्परोव को हराकर नए विश्व विजेता बनकर सुर्खियों में आए थे। उसके बाद से वह 2006 तक लगातार विश्व चैंपियन रहे थे। मौजूदा समय में दुनिया के सातवें नंबर के खिलाड़ी क्रैमनिक ने कहा कि मैंने दो-तीन महीने पहले ही संन्यास लेने का फैसला कर लिया था।



व्लादिमिर क्रैमनिक ने मंगलवार को पेशावर शतरंज से संन्यास लेने की घोषणा कर दी। 43 वर्षीय क्रैमनिक 2000 की शतरंज विश्व चैंपियनशिप में गत चैंपियन गैरी कस्परोव को हराकर नए विश्व विजेता बनकर सुर्खियों में आए थे। उसके बाद से वह 2006 तक लगातार विश्व चैंपियन रहे थे। मौजूदा समय में दुनिया के सातवें नंबर के खिलाड़ी क्रैमनिक ने कहा कि मैंने दो-तीन महीने पहले ही संन्यास लेने का फैसला कर लिया था।

### आज का राशिफल

मेष: राशि स्वामी रेवती के तृतीय चरण पर चल रहा है। नौकरी में उच्च पद प्राप्ति की संभावना बन रही है। बृहस्पति शुक्र राशि पर मार्गी होगा। शुभ: आज संपत्ति सुख में विस्तार होगा। किसी बुजुर्ग से धन प्राप्ति हो सकती है। नौकरी में स्थान परिवर्तन उन्नति के साथ होगा। अनावश्यक व्यय पर नियंत्रण रखें। मिथुन: नौकरी में उच्च पद की प्राप्ति का योग बना हुआ है। नौकरी तथा व्यवसाय में भी भागीदारी व साथियों का सहयोग पर्याप्त मात्रा में मिलेगा। आलस्य का त्याग कर सक्रिय रहें। कर्क: आज पश्चिम दिशा की राजकीय यात्रा का योग है। सार्वकाल से रात्रि तक अध्ययन, पठन-पाठन में मन लगेंगे। सिंह: घर में मंगलिक कार्यों के आयोजन से मन में प्रसन्नता व व्यस्तता रहेगी। अभिन्न मित्रों के सहयोग से व्यवसाय के नए स्रोत बनेंगे। अमरुती बढने, अकस्मात् बड़ी मात्रा में पैसा हाथ में आने से मनोबल बढ़ा रहेगा। कन्या: कार्यक्षेत्र में परिश्रम की अधिकता रहेगी, आय में यथोचित वृद्धि होगी। बौद्धिक कार्यों व लेखन आदि से भी आय होगी। उच्च शिक्षा, शोधार्थि में सार्वक परिणाम मिलेंगे। तुला: आज आपकी इच्छा के विरुद्ध कोई कार्य मिल सकता है, जिससे आप असहज हो जाएंगे। अकस्मात् अविद्योहित खर्च बढ़ सकते हैं। यदि आप नौकरी में हैं तो अधिकारियों का सहयोग मिलेगा। शुक्र: राशि का स्वामी मंगल पंचम में, मीन राशि का होकर शुक्र से षडष्टक योग बन रहा है। बहुत समय से रुका हुआ धन किसी महापुरुष के सहयोग से प्राप्त हो जाएगा। धनु: राशि स्वामी बृहस्पति आज राशि से द्वापद भाव में मार्गी हो रहा है। प्रथम भाव में शुक्र भी कार्यक्षेत्र में कठिनाई व परिश्रम की अधिकता रखेगा। मकर: आज आपके भाग्य का उदय। धन, कर्म, कीर्ति की वृद्धि, शत्रु चिन्ताओं का दमन प्रबल से प्रबल विरोधियों के होने पर भी अंत में सर्वत्र विजय, विभूति, सफलता की प्राप्ति, हर्ष मंगलमय परिवर्तन और मनोर्थ सिद्धि होगी। कुंभ: आज कार्यक्षेत्र में अतिरिक्त जिम्मेदारी और धार्मिक कार्यों में व्यस्तता बढ़ेगी। संपत्ति का विस्तार और संपत्ति से आय में वृद्धि होगी। मीन: संपत्ति के सुधार व रख रखाव में खर्च बढ़ेगा। संपत्ति से भी आय के नए स्रोत विकसित होंगे। देश-देशान्तर से शुभ समाचार मिलेंगे। राजनीति में बढ़ते जनसंपर्क का लाभ उठाएं। आज यदि संपत्ति या व्यवसाय में निवेश करना पड़े तो निश्चित होकर करें, आगे बहुत फायदा होगा।

### देखें, काले चना का स्वादिष्ट कबाब रेसिपी

सामग्री : शीशे हुए चने-1/2 कप, पनीर-1/2 कप, आलू-1 उबला और छिन्का हुआ, घी-2-3 टेबल स्पून, तेल-1 टेबल स्पून, हरा धनिया-1 टेबल स्पून (बारीक कटा हुआ), हरी मिर्च-2 (बारीक कटी हुई), अदरक-1/2 इंच टुकड़ा, जीरा -1/2 चम्मच, धनिया पाउडर-1 चम्मच, गरम मसाला-1/2 चम्मच, अमचूर पाउडर-1/2 चम्मच, लाल मिर्च पाउडर-1/4 चम्मच, नमक-स्वादानुसार विधि : पैन में 1 टेबल स्पून तेल डालकर गरम करेंगे। गरम तेल में जीरा डाल कर भुंयेंगे। इसके बाद इसमें धनिया पाउडर, बारीक कटा हुआ अदरक और बारीक कटी हुई हरी मिर्च डालकर मसालों को हल्का सा भून लेंगे। मसाला भुन जाने पर इसमें चने डाल डालेंगे। साथ में गरम मसाला, अमचूर पाउडर, लाल मिर्च पाउडर और नमक डालकर सारी चीजों को अच्छे से मिलाएंगे। अब इसमें 1/4 कप पानी डालकर नरम होने तक पका लेंगे। आलू और पनीर को कद्दूस कर लेंगे। चने जब ठंडे हो जाएं तो इन्हें मिक्सर में डालकर पीस लेंगे। पीसे हुए चनों में कद्दूस किया हुआ पनीर और आलू डालेंगे। 1/2 छोटी



चम्मच नमक और थोड़ा सा हरा धनिया डालकर सारी चीजों को अच्छे से मिक्स कर लेंगे। कबाब बनाने के लिए मिक्सर लेकर हाथ से दबा-दबाकर गोल श्रेप दें। सारे कटलेट्स को ऐसे ही बना लेंगे। लौह रिटिक पैन में 2-3 टेबल स्पून घी डाल कर एक-एक करके कबाब डालकर उसे धीमी आंच पर फ्राय करेंगे। कबाब को बहुत सावधानी से पलटें। दोनों ओर से गोल्डन ब्राउन हो जाने पर कबाब को प्लेट में निकाल लीजिए। कबाब को दही, हरे धनिये की चटनी, टमैटो सॉस या अपनी किसी भी मसालेदार चटनी के साथ सर्व करें।

### शब्द सामर्थ्य- 64

- बाएं से दाएं
- जल छिड़कना, राजा के सिंहासन रोहन का अनुष्ठान
  - एक प्रसिद्ध सफेद पक्षी, वक मवाद, पीब (अं)
  - जाति
  - हाथ से धीरे-धीरे टोंकना, श्रपकना
  - कमल रोग से ग्रसित व्यक्ति (उ.)
  - किरण
  - दुखदायी, दार्दनाक
  - विवाद, कहासुनी, तकरार
  - समूह, दल, समुदाय
  - दण्ड
  - काजल
  - अनाथ, निराश्रित, यतीम
  - दुख, शोक
  - एक प्रसिद्ध सफेद पक्षी, वक
  - राज्य का विदेश में प्रतिनिधि। ऊपर से नीचे
  - विचित्र, अद्भूत
  - अंदर ही अंदर हानि पहुंचाना
  - चंचल, वाणी
  - गुमराह, जो रास्ते से भटक गया हो
  - मुलायम सिंह
  - समूह, दल, समुदाय
  - काल
  - अनाथ, निराश्रित, यतीम
  - दुख, शोक
  - एक प्रसिद्ध सफेद पक्षी, वक
  - राज्य का विदेश में प्रतिनिधि। ऊपर से नीचे
  - विचित्र, अद्भूत
  - अंदर ही अंदर हानि पहुंचाना
  - चंचल, वाणी
  - गुमराह, जो रास्ते से भटक गया हो
  - मुलायम सिंह
  - समूह, दल, समुदाय
  - काल
  - अनाथ, निराश्रित, यतीम
  - दुख, शोक
  - एक प्रसिद्ध सफेद पक्षी, वक
  - राज्य का विदेश में प्रतिनिधि। ऊपर से नीचे
  - विचित्र, अद्भूत
  - अंदर ही अंदर हानि पहुंचाना
  - चंचल, वाणी
  - गुमराह, जो रास्ते से भटक गया हो
  - मुलायम सिंह
  - समूह, दल, समुदाय
  - काल
  - अनाथ, निराश्रित, यतीम
  - दुख, शोक
  - एक प्रसिद्ध सफेद पक्षी, वक
  - राज्य का विदेश में प्रतिनिधि। ऊपर से नीचे
  - विचित्र, अद्भूत
  - अंदर ही अंदर हानि पहुंचाना
  - चंचल, वाणी
  - गुमराह, जो रास्ते से भटक गया हो
  - मुलायम सिंह
  - समूह, दल, समुदाय
  - काल
  - अनाथ, निराश्रित, यतीम
  - दुख, शोक
  - एक प्रसिद्ध सफेद पक्षी, वक
  - राज्य का विदेश में प्रतिनिधि। ऊपर से नीचे
  - विचित्र, अद्भूत
  - अंदर ही अंदर हानि पहुंचाना
  - चंचल, वाणी
  - गुमराह, जो रास्ते से भटक गया हो
  - मुलायम सिंह
  - समूह, दल, समुदाय
  - काल
  - अनाथ, निराश्रित, यतीम
  - दुख, शोक
  - एक प्रसिद्ध सफेद पक्षी, वक
  - राज्य का विदेश में प्रतिनिधि। ऊपर से नीचे
  - विचित्र, अद्भूत
  - अंदर ही अंदर हानि पहुंचाना
  - चंचल, वाणी
  - गुमराह, जो रास्ते से भटक गया हो
  - मुलायम सिंह
  - समूह, दल, समुदाय
  - काल
  - अनाथ, निराश्रित, यतीम
  - दुख, शोक
  - एक प्रसिद्ध सफेद पक्षी, वक
  - राज्य का विदेश में प्रतिनिधि। ऊपर से नीचे
  - विचित्र, अद्भूत
  - अंदर ही अंदर हानि पहुंचाना
  - चंचल, वाणी
  - गुमराह, जो रास्ते से भटक गया हो
  - मुलायम सिंह
  - समूह, दल, समुदाय
  - काल
  - अनाथ, निराश्रित, यतीम
  - दुख, शोक
  - एक प्रसिद्ध सफेद पक्षी, वक
  - राज्य का विदेश में प्रतिनिधि। ऊपर से नीचे
  - विचित्र, अद्भूत
  - अंदर ही अंदर हानि पहुंचाना
  - चंचल, वाणी
  - गुमराह, जो रास्ते से भटक गया हो
  - मुलायम सिंह
  - समूह, दल, समुदाय
  - काल
  - अनाथ, निराश्रित, यतीम
  - दुख, शोक
  - एक प्रसिद्ध सफेद पक्षी, वक
  - राज्य का विदेश में प्रतिनिधि। ऊपर से नीचे
  - विचित्र, अद्भूत
  - अंदर ही अंदर हानि पहुंचाना
  - चंचल, वाणी
  - गुमराह, जो रास्ते से भटक गया हो
  - मुलायम सिंह
  - समूह, दल, समुदाय
  - काल
  - अनाथ, निराश्रित, यतीम
  - दुख, शोक
  - एक प्रसिद्ध सफेद पक्षी, वक
  - राज्य का विदेश में प्रतिनिधि। ऊपर से नीचे
  - विचित्र, अद्भूत
  - अंदर ही अंदर हानि पहुंचाना
  - चंचल, वाणी
  - गुमराह, जो रास्ते से भटक गया हो
  - मुलायम सिंह
  - समूह, दल, समुदाय
  - काल
  - अनाथ, निराश्रित, यतीम
  - दुख, शोक
  - एक प्रसिद्ध सफेद पक्षी, वक
  - राज्य का विदेश में प्रतिनिधि। ऊपर से नीचे
  - विचित्र, अद्भूत
  - अंदर ही अंदर हानि पहुंचाना
  - चंचल, वाणी
  - गुमराह, जो रास्ते से भटक गया हो
  - मुलायम सिंह
  - समूह, दल, समुदाय
  - काल
  - अनाथ, निराश्रित, यतीम
  - दुख, शोक
  - एक प्रसिद्ध सफेद पक्षी, वक
  - राज्य का विदेश में प्रतिनिधि। ऊपर से नीचे
  - विचित्र, अद्भूत
  - अंदर ही अंदर हानि पहुंचाना
  - चंचल, वाणी
  - गुमराह, जो रास्ते से भटक गया हो
  - मुलायम सिंह
  - समूह, दल, समुदाय
  - काल
  - अनाथ, निराश्रित, यतीम
  - दुख, शोक
  - एक प्रसिद्ध सफेद पक्षी, वक
  - राज्य का विदेश में प्रतिनिधि। ऊपर से नीचे
  - विचित्र, अद्भूत
  - अंदर ही अंदर हानि पहुंचाना
  - चंचल, वाणी
  - गुमराह, जो रास्ते से भटक गया हो
  - मुलायम सिंह
  - समूह, दल, समुदाय
  - काल
  - अनाथ, निराश्रित, यतीम
  - दुख, शोक
  - एक प्रसिद्ध सफेद पक्षी, वक
  - राज्य का विदेश में प्रतिनिधि। ऊपर से नीचे
  - विचित्र, अद्भूत
  - अंदर ही अंदर हानि पहुंचाना
  - चंचल, वाणी
  - गुमराह, जो रास्ते से भटक गया हो
  - मुलायम सिंह
  - समूह, दल, समुदाय
  - काल
  - अनाथ, निराश्रित, यतीम
  - दुख, शोक
  - एक प्रसिद्ध सफेद पक्षी, वक
  - राज्य का विदेश में प्रतिनिधि। ऊपर से नीचे
  - विचित्र, अद्भूत
  - अंदर ही अंदर हानि पहुंचाना
  - चंचल, वाणी
  - गुमराह, जो रास्ते से भटक गया हो
  - मुलायम सिंह
  - समूह, दल, समुदाय
  - काल
  - अनाथ, निराश्रित, यतीम
  - दुख, शोक
  - एक प्रसिद्ध सफेद पक्षी, वक
  - राज्य का विदेश में प्रतिनिधि। ऊपर से नीचे
  - विचित्र, अद्भूत
  - अंदर ही अंदर हानि पहुंचाना
  - चंचल, वाणी
  - गुमराह, जो रास्ते से भटक गया हो
  - मुलायम सिंह
  - समूह, दल, समुदाय
  - काल
  - अनाथ, निराश्रित, यतीम
  - दुख, शोक
  - एक प्रसिद्ध सफेद पक्षी, वक
  - राज्य का विदेश में प्रतिनिधि। ऊपर से नीचे
  - विचित्र, अद्भूत
  - अंदर ही अंदर हानि पहुंचाना
  - चंचल, वाणी
  - गुमराह, जो रास्ते से भटक गया हो
  - मुलायम सिंह
  - समूह, दल, समुदाय
  - काल
  - अनाथ, निराश्रित, यतीम
  - दुख, शोक
  - एक प्रसिद्ध सफेद पक्षी, वक
  - राज्य का विदेश में प्रतिनिधि। ऊपर से नीचे
  - विचित्र, अद्भूत
  - अंदर ही अंदर हानि पहुंचाना
  - चंचल, वाणी
  - गुमराह, जो रास्ते से भटक गया हो
  - मुलायम सिंह
  - समूह, दल, समुदाय
  - काल
  - अनाथ, निराश्रित, यतीम
  - दुख, शोक
  - एक प्रसिद्ध सफेद पक्षी, वक
  - राज्य का विदेश में प्रतिनिधि। ऊपर से नीचे
  - विचित्र, अद्भूत
  - अंदर ही अंदर हानि पहुंचाना
  - चंचल, वाणी
  - गुमराह, जो रास्ते से भटक गया हो
  - मुलायम सिंह
  - समूह, दल, समुदाय
  - काल
  - अनाथ, निराश्रित, यतीम
  - दुख, शोक
  - एक प्रसिद्ध सफेद पक्षी, वक
  - राज्य का विदेश में प्रतिनिधि। ऊपर से नीचे
  - विचित्र, अद्भूत
  - अंदर ही अंदर हानि पहुंचाना
  - चंचल, वाणी
  - गुमराह, जो रास्ते से भटक गया हो
  - मुलायम सिंह
  - समूह, दल, समुदाय
  - काल
  - अनाथ, निराश्रित, यतीम
  - दुख, शोक
  - एक प्रसिद्ध सफेद पक्षी, वक
  - राज्य का विदेश में प्रतिनिधि। ऊपर से नीचे
  - विचित्र, अद्भूत
  - अंदर ही अंदर हानि पहुंचाना
  - चंचल, वाणी
  - गुमराह, जो रास्ते से भटक गया हो
  - मुलायम सिंह
  - समूह, दल, समुदाय
  - काल
  - अनाथ, निराश्रित, यतीम
  - दुख, शोक
  - एक प्रसिद्ध सफेद पक्षी, वक
  - राज्य का विदेश में प्रतिनिधि। ऊपर से नीचे
  - विचित्र, अद्भूत
  - अंदर ही अंदर हानि पहुंचाना
  - चंचल, वाणी
  - गुमराह, जो रास्ते से भटक गया हो
  - मुलायम सिंह
  - समूह, दल, समुदाय
  - काल
  - अनाथ, निराश्रित, यतीम
  - दुख, शोक
  - एक प्रसिद्ध सफेद पक्षी, वक
  - राज्य का विदेश में प्रतिनिधि। ऊपर से नीचे
  - विचित्र, अद्भूत
  - अंदर ही अंदर हानि पहुंचाना
  - चंचल, वाणी
  - गुमराह, जो रास्ते से भटक गया हो
  - मुलायम सिंह
  - समूह, दल, समुदाय
  - काल
  - अनाथ, निराश्रित, यतीम
  - दुख, शोक
  - एक प्रसिद्ध सफेद पक्षी, वक
  - राज्य का विदेश में प्रतिनिधि। ऊपर से नीचे
  - विचित्र, अद्भूत
  - अंदर ही अंदर हानि पहुंचाना
  - चंचल, वाणी
  - गुमराह, जो रास्ते से भटक गया हो
  - मुलायम सिंह
  - समूह, दल, समुदाय
  - काल
  - अनाथ, निराश्रित, यतीम
  - दुख, शोक
  - एक प्रसिद्ध सफेद पक्षी, वक
  - राज्य का विदेश में प्रतिनिधि। ऊपर से नीचे
  - विचित्र, अद्भूत
  - अंदर ही अंदर हानि पहुंचाना
  - चंचल, वाणी
  - गुमराह, जो रास्ते से भटक गया हो
  - मुलायम सिंह
  - समूह, दल, समुदाय